ओ३म्

स्थापना वर्ष:१९४२

नूतन निष्काम पत्रिका

नूतन निष्काम पत्रिका * वर्ष-9 * अंक-11 * मुम्बई * नवम्बर-2018 * मूल्य-रु.9/-

''अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन''दिल्ली
25 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 2018

चाणक्य नीति दर्पण

ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।।

- नीतिश. १२

जिन मनुष्यों में न विद्या है, न तप है, न दान देने की भावना है, न ज्ञान है, न शील है, न ही जीवन में कोई उत्तम गुण है और न धर्म है, वे पृथिवी पर भाररूप पशु ही हैं, जो मनुष्य के रूप में विचरण करते हैं।

किसी उर्दू कवि ने भी मनुष्य की सुन्दर परिभाषा की है-

दर्देविले पासे वफा और जज्बये ईमा होना ।
है श्राधमीयत यही और यही इन्सा होना ।।

मनुष्य की परीक्षा होती है कर्म से। वेद में कहा है-

अकर्मा दस्युः। - ऋ. १०/२२/८

कर्म न करनेवाला मनुष्य दस्यु है।

इसका फलितार्थ यह हुआ कि **सुकर्मा आर्यः**- शुभ कर्म करनेवाला, आचरणवान् मनुष्य आर्य है, श्रेष्ठ मनुष्य है।

गुणरूतुङ्गतां याति नोच्चैरासनसंस्थितः।
प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरूडायते ।।

मनुष्य गुणों से ही उच्चता प्राप्त करता है, ऊँचे आसन पर बैठने से नहीं। क्या राजभवन के शिखर पर बैठने से कौआ हंस बन सकता है? कदापि नहीं।

तावद् भयेषु भेतव्यं यावद्भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमशङ्कया ।।३।।

शब्दार्थ–**भयेषु** भयों से **तावत्** तभी तक **भेतव्यम्** डरना चाहिए **यावत्** जबतक **भयम्** भय **अनागतम्** आया नहीं है। **भयम्** भय को **आगतम्** आया हुआ **दृष्ट्वा तु** देखकर तो **अशङ्कया** निशङ्क होकर उसपर **प्रहर्तव्यम्** प्रहार करना चाहिए, उसे दूर करने का उपाय करना चाहिए।

भावार्थ- आपत्तियो और संकटों से तभी तक डरना चाहिए जब तक वे दूर हैं परन्तु जब भय और संकट सिर पर आ पड़े तब शंका-रहित होकर उनपर प्रहार करना चाहिए, उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

विमर्श- जबतक भय दूर है तबतक उससे डरना उचित है परन्तु जब भय, आपत्ति और संकट सिर पर आ पड़े तब डरने से उनसे **मुक्ति**= छुटकारा नहीं मिलेगा। जब भय आ गया तब कटिबद्ध होकर उस भय को दूर करने का उपाय करना चाहिए। भय उपस्थित होने पर भयभीत नहीं होना चाहिए अपितु वेद के शब्दों में कहना चाहिए-

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः ।।
यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ।। -अथर्व. २।१५।१,३

जैसे द्युलोक और पृथिवीलोक न डरते हैं, न हिंसित होते हैं, ऐसे ही हे मेरे प्राण! तू भी भयभीत मत हो।

जैसे सूर्य और चन्द्रमा न डरते हैं और न हिंसित होते हैं, ऐसे ही हे मेरे प्राण ! तू भी भयभीत मत हो।

एकोदरसमुद्भूता एकनक्षत्रजातका: ।
न भवन्ति समा: शीले यथा बदरकण्टका: ।।४।।

शब्दार्थ– **एक–उद्र–समुद्भूता:** एक गर्भ=माता (पिता) से उत्पन्न हुए तथा **एक–नक्षत्र–ज्ञातका:** एक ही नक्षत्र में जन्मे हुए सब बालक **शीले** गुण-कर्म-स्वभाव **में समा:** समान **न भवन्ति** नहीं होते **यथा जैसे बदरकण्टका:** बेर और उसके काँटे समान नहीं होते अथवा जैसे बेरी से उत्पन्न हुए सब काँटे समान नहीं होते।

भावार्थ- एक ही माता-पिता से और एक ही नक्षत्र में जन्मे हुए सब बालक गुण-कर्म-स्वभाव में समान नहीं होते, जैसे बेर और उसके काँटे समान नहीं होते।

विमर्श- सब समान नहीं होते। वेद में कहा है-

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः सम्मातरा चिन्न समं दुहाते ।
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः ।।

-- ऋ. १०।११७।६

दोनों हाथ एक समान होते हुए भी एक समान कर्म नहीं कर पाते। एक मातावाली होती हुई भी दो बछड़ियाँ एक समान दूध नहीं देतीं दो जुडवाँ भाइयों का सामर्थ्य=बल-शक्ति भी एक जैसा नहीं होता। नातेदार सम्बन्धी होते हुए भी दो मनुष्य एक समान दूसरों को तृप्त नहीं करते अथवा एक समान दान नहीं देते।

एक और वेदमन्त्र में इस असमानता का सुन्दर प्रतिपादन किया गया है-

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः ।
श्रादध्नास उपकक्षास उत्वा ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे ।।

- ऋ. १०।७१।७

ऑख और कानोंवाले होते हुए सखा=एक साथ ज्ञान प्राप्त करनेवाले मनुष्य मन के वेगों में एक समान नहीं होते। कोई मुख तक जलवाले (मुख तक गहरे) तालाब के समान, कोई कक्ष=बगल तक गहरे तालाब के समान और कोई डुबकी लगाकर स्नान करने योग्य जलाशयों के सदृश देखे जाते हैं।

वेद ने कितने स्पष्ट शब्दों में और कितने उदाहरण देकर मनुष्यों की विषमता का वर्णन किया है। उपर्युक्त श्लोक वेद के एक अङ्ग का छायानुवाद मात्र है।

निःस्पृहो नाऽधिकारी स्यान्नाकामी मण्डनप्रियः।
नाऽविदग्धः प्रियं ब्रू यात् स्फुटवक्ता न वञ्चकः ।।५।।

शब्दार्थ– **अधिकारी** अधिकारी **निःस्पृहः** आकांक्षा-रहित, निर्लोभ **न स्यात्** नहीं होता अर्थात् अधिकार पाकर निर्लोभ होना कठिन है, **मण्डनप्रियः** श्रृंगार का प्रेमी **अकामी न** अकाम नहीं होता अर्थात् वह अवश्य ही कामुक होता है **अविदग्धः** चातुर्यहीन मनुष्य, अविद्वान प्रियम् प्रिय और मधुर वचन न हीं ब्रूयात् बोलता, मधुरभाषी नहीं होता और स्फुटवक्ता स्पष्ट कहनेवाला वञ्चकः न कभी धोखेबाज नहीं होता।

❒❒❒

आर्य समाज सांताक्रुज़, मुम्बई का मासिक मुखपत्र
वर्ष : ९ अंक ११ (नवम्बर –२०१८)

- दयानंदाब्द : १९५, विक्रम सम्वत् : २०७५
- सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,११९

प्रबन्ध संपादक : चन्द्रगुप्त आर्य
संपादक : संगीत आर्य
सह संपादक : संदीप आर्य
कार्यकारी संपादक : विनोद कुमार शास्त्री, लालचन्द आर्य, रमेश सिंह आर्य, यशबाला गुप्ता.

विज्ञापन की दरें : शुल्क
— पूरा पृष्ठ : रु. ३,०००/- — एक प्रति : रु. ९/-
— १/२ पृष्ठ : रु. २,०००/- — वार्षिक : रु. १००/-
— १/४ पृष्ठ : रु. १,५००/- — आजीवन : रु. १०००/-
— विशेषांक की दरें भिन्न होंगी ।
वर्गीकृत विज्ञापन

रु. १०/- प्रति शब्द, न्यूनतम रु. ५००/- चैक/डीडी/मनी आर्डर आदि 'आर्य समाज सान्ताक्रुज' के नाम से ही भेजें, मुंबई के बाहर के चैक न भेजे। विज्ञापन सामग्री १० तारीख तक भेजें। **'नूतन निष्काम पत्रिका'** का मुद्रण ऑफसेट विधि से होता है।

पता : आर्य समाज सांताक्रुज़
(विठ्ठलभाई पटेल मार्ग) लिंकिंग रोड, सांताक्रुज़ (प.), मुंबई –५४. फोन : २६६० २८००, २६६० २०७५

अनुक्रमणिका	पृष्ठ सं.
चाणक्य नीति दर्पण	२
सम्पादकीय	३
प्रभु प्राप्ति के लिए विद्वान व संयमी ...	४
हिंदी के बढ़ते वैश्विक प्रभाव में महर्षि दयानंद ..	५-७
"प्रश्न-मन के ऊपर नियंत्रण कैसे हाता है?"	८-९
विचार शक्ति का चमत्कार	९
आर्य समाज की स्थापना एवं पृष्ठ भूमि	१०-११
स्वामी दयानन्द सरस्वती/जगत को आर्य बनाओ	१२
जागो अब वैदिक विद्वानों	१३
गीत/जय हो भारत-भूमि	१४
"वेदों में विश्व बन्धुत्व की भावना की विवेचना"	१५
"ऋण तभी चुकेगा"/"होन हार वीरवान के"	१६

सम्पादकीय

दीवाली की अंधेरी रात

सन १८८३ की रात दीवाली की अमावस्या की रात थी। दीपावली की जगमगाहट से चहुं ओर प्रकाश प्रसरित हो रहा था, सब ओर खुशियों का सुखद वातावरण था किंतु उस रात एक दीपक की लौ संकुचित होती जा रही थी, उस दीपक का तेल समाप्ति की ओर था इसीलिए वह दीपक बुझते बुझते बार बार टिमटिमा रहा था, उसकी लौ प्रकम्पित हो रही थी। पता नहीं वह दीपक मृत्यु का सामीप्य प्राप्त कर रहा था या उस परमात्मा की अमृतमयी गोद में चिरनिंद्रा विश्राम करने को लालायित था। इतने गहरे कष्टों के होते हुए भी उनके मुख में कोई वेदना की छवि नहीं थी, किसी घातक के लिए कोई द्वेष न था। उनके मुखारविंद से बस आ रही थी तो ईश्वर की स्तुति की मधुर तरंगें। एक महान ईश्वर भक्त ईश्वर-प्रणिधान की उच्चतम पराकाष्ठा का परिचय दे रहा था। उस समाधिस्थ योगी ने अंतिम वाक्य कहा- हे ईश्वर तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो.... और वह इस असार संसार से सदा सदा के लिए विदा हो गया। भारत के भाग्य का भानु भगवान दयानन्द कालकराल रूपी अस्ताचल में असमय ही अस्त हो गया और पीछे छोड़ गया अपने भक्तों के लिए एक लंबी कार्य सूची जिसमें लिखा था- वेद के मार्ग पर चलना, सच्चे ईश्वर की उपासना करना , सत्य का ग्रहण करना, अविद्या का नाश करना, सबसे प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार व्यवहार करना और समस्त संसार का उपकार करना....

आओ ऋषि की इस वसीयत को ध्यान से पढ़ें और उसके अधूरे कार्यो को पूरा करके ऋषि ऋण से मुक्त होवें, यही इस दीवाली के दिन स्वामी दयानंद जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सन्दीप आर्य
मो.: ९९६९ ०३७ ८३७

प्रभु प्राप्ति के लिए विद्वान व संयमी से ज्ञान आवश्यक

डॉ. अशोक आर्य

मानव सदा ही प्रभु की शरण में रहना चाहता है किन्तु वह उपाय नहीं करता जो, प्रभू शरण पाने के अभिलाषी के लिए आवश्यक होते हैं । यदि हम प्रभु की शरण में रहना चाहते हैं तो हमारी प्रत्यएक चेष्टा, प्रत्येक यत्न बुद्धि को पाने के उद्देश्य से होना चाहिये । दूसरे हम सदा ज्ञानी, विद्वान लोगों से प्रेरणा लेते रहें तथा हम सदा उन लोगों के समीप रहें, जो विद्वान हों, ज्ञानी हों । ऐसे लोगों के समीप रहते हुये हम उनसे ज्ञान प्राप्त करते रहें। इस बात को ही यह मन्त्र अपने उपदेश में हमें बता रहा है। मन्त्र हमें इस प्रकार उपदेश कर रहा है:-

इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूताः सुतावतः।

उप ब्रह्माणि वाघतः ॥ ऋग्वेद १.३.५ ॥

इस मन्त्र में चार बातों की ओर संकेत किया गया है :-

१. इन्द्रिया वश में हों

जीव ने विगत मन्त्र में जो परमपिता प्रमात्मा से जो प्रार्थना की थी उस का उत्तर देते हुये पिता इस मन्त्र में हमें उपदेश कर रहे हैं कि हे इन्दियों के अधिष्ठाता जीव! हे इन्द्रियों को अपने वश में कर लेने वाले जीव । अर्थात प्रभु उस जीव को सम्बोधन कर रहे हैं, जिसने अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया है । उस पिता का एक नियम है कि वह पिता उसे ही अपने समीप बैठने की अनुमति देता है, उसे ही अपने समीप स्थान देता है, जो अपनी इन्दिरयों के आधीन न हो कर अपनी इन्द्रियों को अपने आधीन कर लेता है, रहता अपितु इन्द्रियां जिसके वश में होती है। अत: इन्द्रियों पर आधिपत्य पा लेने में सफ़ल रहने वाला जीव जब उस प्रभु को पुकारता है ता ऐसे जीव की प्रार्थना को प्रभु अवश्य ही स्वीकार करता है तथा जीव को कहता है कि हे इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाले जीव ! तु आ मेरे समीप आकर स्थान ले, मेरे समीप आ कर बैठ।

२. बुद्धि सूक्षम हो

हे जीव ! तूं अपने सब प्रयास, सब यत्न, सब कर्म बुद्धि को पाने के लिए, बुद्धि को बढाने के लिए ही करता है। तूं सदा बुद्धि से ही प्रेरित रहता है। बुद्धि सदा तुझे कुछ न कुछ प्रेरणा करती रहती है। तूं जितने भी कार्य करता है, वह सब तूं या तो बुद्धि से करता है अथवा तूं जो भी करता है, वह सब बुद्धि को पाने के यत्न स्वरुप करता है। तेरी सब प्रेरणाएं बुद्धि को पाने के लिए प्रेरित होती हैं। इतना ही नहीं तूं जितनी भी चेष्टाएं करता है, जितने भी यत्न करता है, जितना भी परिश्रम करता है, जितना भी प्रयास करता है, वह सब भी तूं बुद्धि को पाने के लिए ही करता है। तूं अपने इस यत्न को निरन्तर बनाए रख। तेरे इस यत्न से ही तेरी बुद्धि सूक्षम हो सकेगी, जिस बुद्धि के द्वारा तूं इस ब्रह्ममाण्ड में मेरी महिमा, मेरी सृष्टि को देख पाने में सफ़ल होगा।

३. उतम बुद्धि पाने का प्रयास

तेरे अन्दर जो यह तीव्र बुद्धि आई है, जो सूक्षम बुद्धि का स्रोत बह रहा है, वह तूंने अपने ब्रह्मचर्य काल में अपने ज्ञानी, विद्वान तथा सूक्षम बुद्धि से युक्त आचार्यों से, गुरुजनों से, प्रेरित हो कर एकत्र किया है । इतना ही नहीं तूं अब भी उत्तम बुद्धि को पाने के लिए अपनी अभिलाषा को बनाए हुए है । इस कारण तूं ने अब भी उत्तम विद्वान पुरूषों की शरण को नहीं छोडा है, सूक्षम बुद्धि से युक्त गुरूजनों के चरणों में ही रहने का यत्न कर रहा है अर्थात इतनी बुद्धि का स्वामी होने पर भी बुद्धि पाने का यत्न तूंने छोड़ा नहीं है अपितु अब भी तूं इसे पाने के लिये निरन्तर प्रयास में लगा है।

४. सोम रक्षक से मार्ग दर्शन

हे उत्तम बुद्धि के स्वामी जीव ! तूं सोम का सम्पादन करने वाला है। तूं प्रतिक्षण अपने जीवन में ऐसे यत्न, यथा प्राणायाम, दण्ड, बैठक आदि में व्यस्त रहता है, जिन से सोम की तेरे शरीर में उत्पति होती ही रहती है। तूं ने अपना जीवन इतना संयमित व नियमित कर लिया है कि सोम का कभी तेरे शरीर में नाश हो ही नहीं सकता अपितु सोम तेरे शरीर में सदा ही रक्षित है। इतना ही नहीं तूं सदा ऐसे लोगों का, ऐसे विद्वानों का, ऐसे गुरुजनों का साथ पाने व सहयोग लेने के लिए, मार्ग-दर्शन पाने के लिए यत्नशील रहता है, जो सोम का अपने यत्न से अपने शरीर में उत्पन्न कर, उसकी रक्षा करते हैं। सोम रक्षण से वह मेधावी होते हैं । ऐसे मेधावी व्यक्ति के, ऐसे ज्ञान के भण्डारी के, ऐसे संयमी व्यक्ति के समीप रह कर तूं उससे ज्ञान रुपि बुद्धि को ओर भी मेधावी बनाने के लिए यत्न शील है।

पता

१०४- शिप्रा अपार्टमेन्ट

कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

चलभाष : ९७१८ ५२८ ०६८

हिंदी के बढ़ते वैश्विक प्रभाव में महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज का योगदान

डॉ. यतींद्र विद्यालंकार

सूचना प्रौद्योगिकी, व्यापार, राजनीति ज्ञान-विज्ञान सहित प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी का प्रभाव निरंतर बड़ा है। यदि विश्व पटल पर दृष्टिपात किया जाए तो हिंदी के बढ़ते वर्चस्व का आलम यह है कि वैश्वीकरण के दौर में दुनिया भर के व्यापार एवं प्रबंधन से जुड़े विशेषज्ञ हिंदी को सीखने को आतुर है। दुनिया भर में हिंदी संपर्क भाषा के रुप में निरंतर आगे बढ़ी है, दुनिया भर में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग १३० करोड़ हो गई है।

सन १९९९ में मशीन ट्रांसलेशन शिखर बैठक टोक्यो विश्वविद्यालय में आयोजित की गई थी जहां टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हुजूमी तनाका ने जो भाषाई आंकड़े प्रस्तुत किए थे उसमें उस समय चीनी भाषा मंडारिन पहले स्थान पर थी तथा हिंदी दूसरे और अंग्रेजी तीसरे स्थान पर थी आंकड़ों के अनुसार वर्ष २००५ में दुनिया के १०८ देशों में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग ११ करोड़ थी। लेकिन २०१५ में दुनिया के सभी २०६ देशों में करीब १३० करोड़ लोग हिंदी को बोल रहे हैं और हिंदी दुनिया की सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा बन गई है। चीन की मंडारिन भाषा अब द्वितीय स्थान पर आ गई है। अमेरिकी जनगणना ब्यूरो ने साल २०१७ के लिए जो अमेरिकी कम्युनिटी सर्वे रिपोर्ट जारी की है। भारतीय मूल के लोगों की बड़ी संख्या है। इन भारतीय लोगों में सबसे बड़ी संख्या हिंदी वालों की है। दूसरे नंबर पर गुजराती और उसके पश्चात तेलुगू भाषी है, कहना ना होगा कि अमेरिकी धरती पर हिंदी की बढ़ती पहुंच के पीछे यही मनोविज्ञान काम पर रहा है। अमेरिका की धरती पर हिंदी बोलने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है जो एक विशेष बात है वह यह है कि भारतीयों के अलावा अब अमेरिका के गैर भारतीयों में भी हिंदी बोलने एवं सीखने की भारी वृद्धि लिखी गई है कमोवेश यही स्थिति पूरे विश्व में है। इस प्रकार हिंदी विश्व संपर्क भाषा के रूप में दुनिया में निरंतर अपना वर्चस्व स्थापित करते हुए आगे बढ़ रही है।

न्यूयॉर्क की संस्था द वर्ल्ड ऑलमेनक एंड बुक ऑफ फैक्ट्स के १९९९ के न्यूजपेपर इंटरप्राइजेज एसोसिएशन अंक के अनुसार दुनिया भर में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग १३० करोड़ हो गई है इस लिहाज से हिंदी दुनिया में सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा बन गई है निश्चित रूप से हिंदी प्रेमियों के लिए यह बड़ा सकून देने वाला समाचार तथा वर्ग एवं स्वाभिमान की बात है।

विश्व पटल पर हिंदी के बढ़ते वर्चस्व तथा हिंदी को एक आंदोलन की मुहिम के रुप में निरंतर आगे बढ़ाने में व हिंदी को राष्ट्रभाषा के अखिल भारतीय स्वरूप के पश्चात विश्व संपर्क भाषा के रूप में वैभव स्थापित करने के पीछे महर्षि दयानंद एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का योगदान भी बहुत महत्वपूर्ण है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने हिंदी को आर्य भाषा की संज्ञा देकर ना सिर्फ हिन्दी की अखिल भारतीय महत्ता की स्थापना की बल्कि आर्य समाज ने अहिंदी क्षेत्रों में एक आंदोलन के रूप में हिंदीवर्धन का गौरव स्थापित किया। आर्यसमाज से लेकर विश्व के अनेक देशों में प्रवासी भारतीयों को भी आर्य समाज की विचारधारा से परिचित कराने एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार के साथ हिंदी को पढ़ने पढ़ाने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। आर्य समाज ने १९४० के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के द्वारा जहां दक्षिण भारत के हैदराबाद क्षेत्र में हिंदी एवं संस्कृति का गौरव स्थापित किया तथा वहां पर मिलाप सहित कई महत्वपूर्ण हिंदी पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन किया, इसके अलावा पंजाब में हिंदी सत्याग्रह का उद्घोष कर वहां राष्ट्रभाषा हिंदी की महत्ता भारतीयों तक हिंदी के विश्व वैभव का परचम फहराया। विश्व वैभव के साथ हिंदी का फहरता परचम यहां प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव की बात है वही विश्व हिंदी सम्मेलन की श्रंखला में ४३ वर्ष का सफर और हाल ही में १८ से २० अगस्त २०१८ तक मॉरीशस में आयोजित ११वें विश्व हिंदी सम्मेलन का सफल आयोजन संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी समाचार का प्रसारण, संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी ट्यूटर का शुभारंभ, विश्व हिंदी सचिवालय की गतिमान यात्रा, विश्व भर में ६०० से ज्यादा विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्यापन। यह हिंदी का ऊर्जावान एवं गति में प्रवाह है। हिंदी की गतिमान ऊर्जावान वैश्विक वर्चस्व की बेला में युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का महती योगदान है।

आर्य समाज के प्रचारकों ने समय-समय पर दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप, मॉरीशस, फिजी, गुयाना, सुरीनाम के अतिरिक्त अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा आदि देशों में भारतीय संस्कृति व आर्य भाषा हिंदी का जो शंखनाद किया है, उसी का परिणाम है कि विश्य समुदाय में हिंदी का बढ़ता वर्चस्व दृष्टिगोचर हो रहा है। दक्षिण अफ्रीका, केन्या, युगांडा, फिजी, डच, गुयाना, ब्रिटेन और अमेरिका के देशों में आर्य समाज के प्रचारकों ने जाकर के हिंदी का खूब प्रचार और प्रसार किया है। भारत में तो हिंदी की पत्रिकाएं निकाली है, विदेशों में भी आर्य समाज की प्रेरणा से हिंदी के समाचार पत्र एवं पत्रिका निकलें। दक्षिण भारत जहां हिंदी की गतिविधियां बहुत सीमित थी वहां भी आर्य समाज के ही कारण हिंदी के लिए खूब कार्य हुआ। इसी कारण दक्षिण भारत से भी हिंदी पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हुआ जिनमें हैदराबाद से प्रकाशित मिलाप मुख्य है, जो आज भी निरंतर रूप से प्रकाशित हो रहा है। आचार्य हेमचंद्र सुमन जो कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के यशस्वी स्नातक थे हिंदी के प्रखर साहित्यकार व देश विदेश में हिंदी के यशस्वी प्रचारक रहे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से जुड़े हुए पंडित पदम सिंह शर्मा जैसे उद्भट हिंदी विद्वानों ने हिंदी का गौरव वर्धन

किया। आचार्य क्षेमचंद्र सुमन ने आर्य समाज द्वारा संघर्ष में योगदान देने के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिंदी की विपुल सेवा की विशेष चर्चा करते हुए लिखा है कि महात्मा गांधी द्वारा प्रारंभ किए गए हिंदी के प्रचार के इस जज्बे में यदि हर समाज और उसके द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाओं में तैयार किए गए कार्यकर्ताओं ने अपना सक्रिय सहयोग न दिया होता तो कदाचित् इस कार्य में इतनी प्रगति ना हो पाती, जो आज दिखाई दे रही है। समाज के संस्थापक युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद ने हिंदी की को देश के एक्य संपादन तथा भाव प्रभाह का सबसे सफल व एकमात्र सार्थक साधन बताते हुए हिंदी को आर्य भाषा की उपमा देकर सर्वोच्च पद पर अलंकृत किया। सन १९१८ में प्रकाशित महर्षि दयानंद की जीवन कथा श्रीमद् दयानंद प्रकाश के लेखक स्वामी सत्यानंद के शब्दों में आर्य भाषा हिंदी के प्रचार में सबसे पहले यदि किसी ने प्रयत्न किया तो वे स्वामी दयानंद ही थे। गुर्जर देश में उत्पन्न होकर देश देशांतर में आर्य समाज की स्थापना करने के अनंतर भी आर्य भाषा को अपनाया गया। आज दुनिया का शायद ही कोई ऐसा कोना हो जहां भारतीय न बसे हों और जहां हिंदी का वर्चस्व स्थापित ना हुआ हो।

महर्षि दयानंद ने गुजराती होते हुए मी अपने संपूर्ण वांडमय का सृजन हिंदी में किया। महर्षि दयानंदजीने हिंदी को सबसे पहले आर्य भाषा की संज्ञा देकर हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में स्थापित किया। उसी समय बंगाल के समाज सुधारक केशव चंद्र सेन ने भी हिंदी को नवजागरण काल में राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत की थी, तब स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, नेता सुभाष चंद्र बोस समेत प्रमुख नेताओं ने एक स्वर से हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। महर्षि दयानंद का हिंदी के प्रति अगाध प्रेम व निष्ठा का मूल कारण केवल मात्र उनका हिंदी के प्रति आत्मीय लगाव ही था, वरन् हिंदी को आत्मसात करने में हिंदी की व्यापकता एवं सार्वभौमिकता का तर्क भी उसके लिए मुख्य उत्तरदायी है। महर्षि दयानंद पहले अपने व्याख्यान देववाणी संस्कृत में ही दिया करते थे, लेकिन संस्कृत माध्यम से उद्‌गार व्यक्त करने के कारण स्वामी जी अपनी विचारधारा को संस्कृत निष्ठ वर्ग तक ही सीमित कर पा रहे थे, वहीं दूसरी ओर स्वामीजी संस्कृत में व्याख्यान देने के बाद जब उसका अनुवाद हिंदी अथवा बंगला आदि भाषाओं में करवाते थे, तो उनके द्वारा व्यक्त विचार सटीक रूप में जनता तक नहीं पहुंच पा रहे थे। इस स्थिति में दो विषय की स्थिती बन रही थी पहले तो दुराग्रह से ग्रसित अनुवादक व्याख्यान के तथ्यों को अपने हिसाब से देते थे तथा दूसरी ओर स्वामी जी सीधे जनसामान्य से संवाद भी स्थापित नहीं कर पा रहे थे। इस कारण भारत का जन सामान्य वर्ग सीधे भावात्मक संवाद स्थापित करने में महर्षि दयानन्द से अभी दूर था। ऐसे में कोलकाता प्रवास के दौरान ब्रह्म समाज के श्री केशव चंद्र सेन जो कि स्वयं हिंदी के परम प्रेमी थे उनके अनुरोध पर स्वामी दयानंद ने अपने राष्ट्रव्यापी प्रभाव व संपूर्ण भारतीय जनमानस तक विचारों को पहुंचाने के लिए हिंदी भाषा में व्याख्यान देने का निश्चय किया तथा हिंदी में ही संपूर्ण व्यवहार करने का निर्णय लिया। महर्षि दयानंद ने श्री. केशव चंद्र सेन की बात को तुरंत स्वीकार करते हुए हिंदी को संपूर्ण भाव से आत्मसात कर लिया था। इस संदर्भ में प्रस्तुत कथन से दृश्य है कि बंगाली नेता तथा उस समय के राष्ट्रवादी व समाज सुधाकर यह अनुभव करने लगे थे कि हिंदी ही भारत में एक्य संपादन तथा व्यापक प्रचार और प्रसार का एकमात्र माध्यम बन सकती है तथा देश के बहुत बड़े प्रदेश में बोले जाने वाली भाषा है। अत: भारत की भाषाओं में हिंदी ही अखिल भारत की राष्ट्रभाषा बनने का सामर्थ्य रखती है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद द्वारा हिंदी को आत्मसात कर लेने से हिंदी को बड़ा बल मिला, स्वामी दयानन्द ने देश के उत्तर, पश्चिम, पूर्व सहित लगभग सभी क्षेत्रों में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में उसकी व्यापकता से प्रभावित होकर स्वीकार किया तथा हिंदी ही देश के एक्य संपादन में समर्थ है उन्होंने इसका शंखनाद करते हुए प्रत्येक आर्य समाज के लिए हिंदी में व्यवहार करने का आहवान किया। महर्षि दयानंद ने आर्य समाज के दस नियमों को भी न सिर्फ हिंदी में लिखा बल्कि उन्होंने अपने संपूर्ण साहित्य का सृजन भी हिंदी में ही किया। उनकी प्रेरणा से आर्य समाज के पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन जहां हिंदी में हुआ वही आर्य समाज द्वारा देश के शैक्षिक, सामाजिक नवजागरण तथा स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी को नव परवान की प्राप्ति हुई। आर्य समाज के प्रभाव के चलते हिन्दी साहित्य परम्परा में भी नवचेतान के अंकुर स्फुटित तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, मैथिली शरण गुप्त सरीके हिंदी के दिग्गज साहित्यकारों ने हिंदी वैभव का वर्णन करते हुए हिंदी में ही उन्नति के दर्शन किए। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सगर्व उद्‌घोष किया कि-निज भाषा उन्नति है, सब उन्नति को मूल।

आर्य समाज का आंदोलन गतिवान होने पर तथा विभिन्न स्थानों में आर्य समाज की इकाइयां स्थापित होने पर हिंदी प्रचार का कार्य और आगे बढ़ा। महर्षि दयानंद हिंदी के प्रचार के लिए इतने कृत संकल्प ना होते तो उनके अनुयाई इस भाषा के विस्तार का इतना उद्योग न करते तो हिंदी को राष्ट्रभाषा की स्थिति प्राप्त करने में काफी कठिनाई उठानी पड़ती। प्रसिद्ध इतिहासकार व लेखक डॉक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार आर्यसमाज के इतिहास में लिखते हैं कि स्वामी दयानंद का आर्य समाज इस प्रकार का पहला आंदोलन था, जिसने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रथम प्रयास किया। विश्व भर के लगभग १६० से ज्यादा देशों में प्रवासी भारतीयों के बीच आर्य समाज का व्यापक प्रभाव है। जहां-जहां आर्य समाज की किरण पहुंची वहां-वहां हिंदी का प्रभाव स्थापित हुआ है। हिंदी के वैभव को चार चांद लगाते हुए आर्य समाज के प्रचारकों, साहित्यकारों, पत्रकारों ने हिंदी को विश्व वैभव के रूप में भारत की तरह मारीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका सहित विभिन्न देशों में हिंदी को एक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाया। गिरमिटिया साहित्य क्रांति एवं उन्नति का मूल आधार आर्य समाज का ही व्यापक प्रभाव है।

मॉरीशस में आर्य सभा का हिंदी के प्रचार और प्रचार में अनुपम योगदान है, मॉरीशस में मणिलाल पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने वहां आर्य समाज की स्थापना की तथा सन उन्नीस सौ. नौ में मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता की दृष्टि से सर्वप्रथम १५ मार्च १८९२ को हिंदुस्तानी नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन आर्य समाज द्वारा शुरू हुआ। वर्ष १९११ में मॉरीशस आर्य पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, उसके प्रश्चात तो मॉरीशस में हिंदी साहित्य, पत्रकारिता का जहां नव अध्याय प्रारंभ हुआ, वहीं हिंदी के वैश्विक प्रचार प्रसार की एक नई उम्मीद ने जन्म लिया।

जब मॉरीशस में महात्मा गांधी संस्थान की स्थापना हुई तो महात्मा गांधी संस्था द्वारा पत्रिका वसंत के प्रकाश ने नवोदित साहित्यकारों को सशक्त मंच प्रदान किया। सन् १९४५ में आर्य जागृति नाम से दैनिक पत्र ने भी हिंदी वर्चस्व स्थापा में महती भूमिका निभाई। मॉरीशस के हिंदी साहित्यकार के रूप में अभिमन्यु अनंत, जय नारायण राय, प्रोफेसर विष्णु दयाल, वासुदेव, राजेंद्र, अरुण पंडित, गिरजानंद, उमाशंकर आदि का नाम उल्लेखनीय है। वही हिंदी सेवा के रूप में मॉरीशस आर्य समाज के वरिष्ठ नेता मोहनलाल मोहित का नाम भी स्मरणीय है, जो पूरे जीवन भर आर्य समाज एवं हिंदी के प्रति समर्पित भाव से कार्य करते रहे।

सुदूर प्रशांत महासागर के मोती कहे जाने वाले फिजी गणराज्य में भी आर्य समाज ने हिंदी के विश्व वर्चस्व की स्थापना में भरपूर योगदान दिया है। सन १९३० के दशक में पंडित श्री कृष्ण शर्मा के संपादनमें वहां वैदिक संदेश पत्र का प्रकाशन हुआ। जिसने हिंदी के प्रचार-प्रसार का महत्वपूण कार्य किया। फिजी में वर्ष १९१३ में आर्य समाज की स्थापना के साथ ही हिंदी के प्रचार प्रसार की यात्रा प्रारंभ की जो अद्यतन अनवरत रूप से गतिमान है। आर्य समाज के हिंदी प्रेम तथा हिंदी वैभव स्थापना के फलस्वरूप फिजी में राजभाषा के रूप में हिंदी को गौरव प्राप्त हुआ है। फिजी के हिंदी विद्वानों में कमला प्रसाद मिश्र्र पंडित राधा विनोद शर्मा, विधि लक्ष्मण, नंदकिशोर, विवेकानंद शर्मा आदि ने अथक प्रयास से हिंदी के वैश्विक गौरव को आगे बढ़ाया है। फिजी से बड़ी संख्या में हिंदी विद्वानों ने ऑस्टेलिया पहुंचकर हिंदी के प्रचार-प्रसार के रथ को और आगे बढ़ाया है। हाल ही में फिजी की नवोदित हिंदी लेखिका किरण माला सिंह की कृति 'मुझे भी कुछ कहना है।' एक सार्थक प्रयास के रूप में सराही गई है।

आगामी वर्ष २०२१ में प्रस्तावित १२वें विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन स्थल के रूप में फिजी का ही चयन किया गया है। जहां से हिंदी के वैश्विक परवान को नव पंख लगने हैं। सूरीनाम देश से सर्वप्रथम १९६४ में आर्य दिवाकर नाम का पत्र आर्य समाज द्वारा प्रकाशित हुआ जो आज तक अनवरत रूप से प्रकाशित हो रहा है। इस पत्र को सूरीनाम में हिंदी के पठन-पाठन साहित्य सृजन व पत्रकारिता के क्षेत्र में एक स्तंभ के रूप में जाना जाता है। त्रिनिदाड एण्ड टोबैको में आर्य समाज द्वारा 'आर्य ज्योति' नामक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन होता है। गुयाना में आर्य समाज द्वारा हिंदी साहित्य, हिंदी शिक्षण तथा हिंदी पत्रकारिता को परम वैभव तक पहुंचाया गया है। त्रिनिदाड एण्ड टोबैको सहित संपूर्ण दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज के यशस्वी विद्वान व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के उदीयमान स्नातक रहे पंडित नरदेव वेदालंकार ने अपनी संस्था 'हिंदी शिक्षा संघ' द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार व शिक्षण में विशेष योगदान दिया है।

नेपाल, कनाडा, अमेरिका सहित विश्व भर के तमाम देशों में स्थापित आर्य समाज की इकाइयों द्वारा हिंदी को एक आंदोलन व एक मिशन के रूप निरंतर आगे बढ़ाया गया है। हिंदी के वैभव में आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं गुरुकुल तथा डीएवी स्कूल व कॉलेजों का विशेष योगदान रहा है। डीएवी संस्थाओं से जहां आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर भारतीय मेधा शक्ति ने विश्व भर में भारतीय मेधा शक्ति का परचम लहराते हुए विज्ञान प्रौद्योगिकी और चिकित्सा सहित विविध क्षेत्रों में सफलता के झंडे गाडे है वही अपनी जड़ों से जुड़ कर भारतीय संस्कृति हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार में पूर्ण योगदान दिया है। गुरुकुलों से निकले यशस्वी स्नातकों ने आर्य समाज के प्रचारक व हिंदी विद्वानों के रूप में दुनिया के तमाम देशों में जहां योग, अध्यात्म व भारतीय संस्कृति की धुरी बनकर उल्लेखलीय कार्य किया है तो वही हिंदी के प्राचार-प्रसार व लेखन के सारथी के रूप में हिंदी को अनवरत रूप से आगे बढ़ाने में पूर्ण योगदान दिया है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद द्वारा घोषित हिंदी द्वारा एक्य संपादन का कारवां अब भारत की सीमाओं को लांघ कर विश्व बंधुत्व के साथ हिंदी के विश्व प्रभुत्व के रुप में हिंदी गौरव की स्थापना कर रही है। हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ा चुकी है। हिंदी अब अपने विपुल साहित्य तथा समृद्ध व्यापारिक क्षमताओं के रूप में, संचार, सूचना प्रौद्योगिकी आवश्यकता के आधार के साथ विश्व की सबसे बड़ी बोली के रूप में विश्व पटल पर वर्चस्व स्थापित कर रही है। जिसमें महर्षि दयानंद व आर्य समाज का योगदान सदैव स्मरणीय है।

विश्व सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी के बढते वर्चस्व एवं दुनिया भर में हिंदी सीखने की बढ़ती ललक निश्चित रूप से भारतीयों व हिंदी प्रेमियों के लिए हर्ष का विषय है। यह भी भारत के लिए गौरव का विषय है कि दुनिया की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से पांच तो भारतीय भाषाऐं-हिंदी, गुजराती, तमिल, बंगला व तेलगू है।

– सदस्य हिंदी सलाहकार समिति
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय भारत सरकार
संपर्क सूत्र- ९४१२६३४६७२
ईमेल-yatiyog46@gmail.com
कटारिया भवन, सघन क्षेत्र, मंडी धनौरा २४४२३१
जनपद अमरोहा

"प्रश्न-मन के ऊपर नियंत्रण कैसे होता है?"

प्रश्न– मन के ऊपर नियत्रंण कैसे होता है?

उत्तर– मन पर नियंत्रण पाने से पूर्व हमें यह जानना चाहिए कि यह मन है क्या। हमारे शरीर जड़ तत्व है, आत्मा चेतना है। इसी प्रकार बुद्धि तथा मन भी जड़ पदार्थ ही हैं। आत्मा का संयोग पाकर ही ये क्रियाशील होते हैं मूलत: यह जड़ ही है।

यदि मन एक जड़ पदार्थ है तो इससे इतना क्या डरना? किन्तु सृष्टि पर नज़र दौड़ाए तो देखने को मिलेगा कि मानव मात्र इससे नियंत्रित है। जबकि होना ये चाहिए था कि हम उसे नियंत्रित करें।

शास्त्रों में तो मन की भूरी प्रशंसा की गई है वहाँ लिखा है-

''मन एव मनुष्याणाम कारनम बंध मोक्षयो''

अर्थात मन ही मानव के बंधन का कारण है और मन ही मुक्ति का कारण भी है। अर्थात मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

अब प्रश्न उठता है मन को कैसे जीतें? इसके अनेक उपाय हमारे धर्म ग्रंथों में बताए गए हैं-

१. सही ज्ञान की प्राप्ति

जब तक इंसान को सही व सच्चा ज्ञान नहीं मिलता तब तक इस मन को नियंत्रण करने का प्रयास ही नहीं करेगा।

इसीलिए हमें वेदों व अन्य आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय करके, ऋषियों, विद्वानों से ज्ञान प्राप्त करके इस मन पर अंकुश लगाने का प्रयास करना चाहिए।

गौतम बुद्ध से जब किसी ने मन को नियंत्रित करने की तरकीब पूछी तब उन्होंने कहा- मैं मन को धर्म शिक्षा के द्वारा निगृहीत करता हूँ और शास्त्र ज्ञान रूपी रस्सी से बांध लेता हूं।

२ वैराग्य

जब तक हमारे हृदय में वैराग्य की भावना का उदय नहीं होता तब तक नियंत्रण असम्भव है। यह संसार नश्वर है और इसकी समस्त वस्तुएं नश्वर हैं, मिथ्या हैं, अनित्य हैं, जब यह ज्ञान हमें हो जाता है तब हमारे मन की संसार को जकडने वाली पकड ढीली होने लगती है। संसार मे सैंकड़ों उदाहरण मिलते हैं जब जब किसी व्यक्ति ने वैराग्य लिया, सन्यास धारण किया, तब तब वह मन का राजा बना। योगदर्शन में ईश्वर प्रणिधान शब्द आता है जिसका अर्थ है कि समस्त संसार से मोह त्यागकर ईश्वर को समर्पित हो जाएं। ईश्वर से ज्यों ज्यों जुडते जाओगे त्यों त्यों मन के पाश से दूर होते जाओगे।

३ अभ्यास

मन को वश में करने के लिए दीर्घकालिक अभ्यास अपेक्षित है। प्रतिदिन हमे इसको प्यार से समझना पड़ेगा तभी शनै: शनै: मन शांत होने लगेगा। योग के मार्ग पर चलकर भी इसे काबू किया जा सकता है किंतु यह एक दो दिन या एक दो माह की बात नहीं बरसों की कठिन तपस्या के उपरांत ही फल की प्राप्ति होती है। कहा भी गया है-

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात के, सिल पर परत निशान॥

भगवत गीता में भी श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को उपदेश में कहा है-

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलं।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

हे महाबाहो यह मन बड़ा चञ्चल है और इसका निग्रह करना भी बड़ा कठिन है यह तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है। परन्तु हे कुन्तीनन्दन अभ्यास और वैराग्य के द्वारा इसका निग्रह किया जाता है।

४ शुद्ध भोजन

कहा गया है जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन। यह कहावत भी पूर्णतया सत्य है। क्योंकि खाये हुए भोजन से मात्र रस रक्त मांस हड्डी ही नहीं बनती बल्कि वीर्य ओज व तेज़ भी बनते हैं। भोजन के स्थान तत्व शरीर में समाहित हो जाते हैं और सूक्ष्म तत्व मन बुद्धि को पोषित करते हैं।

शास्त्रों में भोजन को ३ श्रेणियों में बांटा है तामसिक, राजसिक व सात्विक। सात्विक भोजन से मन सात्विक होता है शांत होता है, शांत मन ही काबू में आए सकता है। जितना जितना तमोगुणी भोजन होगा उतना उतना मन की वृत्तियां चंचल होती जाएंगी और हमसे बेकाबू होती चली जाएंगी। इसीलिए हमे शाकाहारी व सादा भोजन ही ग्रहण करना चाहिए।

५ प्राणायाम

प्राण के साथ मन का गहरा सम्बंध है। उथला श्वास (प्राण) उथला मन स्थिर व लयबद्ध श्वास स्थिर मन। अर्थात जैसा हम श्वास लेते हैं वैसे ही हमारी मन की वृत्तियां बनती चली जाती है इसीलिए अगर मन को शांत करना है तो सबसे पहले हमें अपने सांसों को शांत करना सीखना चाहिए क्योंकि इस मन का जो वाहन यह सांस ही है इसीलिए योग में प्राणायाम को बहुत अधिक महत्व दिया गया है योगी बनने के लिए प्राण का आयाम बहुत जरूरी है। उदाहरण के तौर पर जब हमें बहुत अधिक क्रोध आता है तब हमारी सांसें तेज चलती है तब हमें योग गुरु यह बताते हैं की आप अपनी सांसो को शांत कीजिए धीमा कीजिए और जैसे ही हमारी सांसे शांत होती है हमारा मन शांत होने लगता है। इसके लिए दीर्घ श्वास प्रेक्षा का अभ्यास अपेक्षित है।

६ ध्यान

ध्यान मन को शांत करने का, कंट्रोल करने का बहुत ही अच्छा उपाय है। जब हम ध्यान में बैठते हैं तब हमारा मन अपने आप समस्त संसार से कटकर किसी एक बिंदु अथवा ध्येय पर टिक जाता है इस

प्रकार हमारे मन की चंचलता स्वयमेव शांत होने लगती है। क्योकि मन को कोई न कोई आलंबन चाहिए बस हमे उसके आलम्बनों को छोड़ अपने निश्चित किये हुए आलम्बन दे देने हैं और उनमें इस मन को व्यस्त कर देना है। इसीलिए स्वामी दयानंद जी ने अपने शरीर के कुछ भागों जैसे भूमध्य अथवा नाक का अग्र भाग आदि पर ध्यान टिकाने का निर्देश दिया है।

७ दृढ़ संकल्प

मन पर नियंत्रण आसान नहीं किन्तु यदि हम दृढ संकल्प कर लें तो नियंत्रण हो जाता हैं । इसके लिए एक मज़बूत संकल्प लेना पड़ता है। आम भाषा मे कहें तो हाथ धोकर इस मन के पीछे पड़ना है। एक बार मन के मान जाने पर यह मन पुन: अपनी वृत्तियों में लग जाता है। सो बार बार, अनेक बार हमें यह भगीरथ प्रयत्न करना पड़ता है। जिस प्रकार एक जंगली हाथी को पालने के समय बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है, उसको एक बड़े लोहे के खूंटे से बांधना पड़ता है जिसको वह तोऽ तोऽ कर बाहर भागने का प्रयत्न करता है किंतु उस पाश में बंधकर अनेक बार छूटने की कोशिश के बाद अंततोगत्वा वह हाथी निढाल हो जाता है और शांत हो जाता है इसी प्रकार यह मन भी उसी हाथी के समान काबू में किया जाता है।

क्योंकि हमारे चित् पर जन्म जन्म के कुसंस्कार पड़े रहते हैं जो बहुत ही दृढ़ और मजबूत होते हैं और हमारे अनेक प्रयत्नों के बावजूद वह संस्कार मिट नहीं पाते, समाप्त नहीं हो पाते हैं इसीलिए उन संस्कारों को दूर करने के लिए हमें उनका बार बार संशोधन करना पड़ता है। यह हमारा दृढ संकल्प व दृढ विश्वास ही उन संस्कारों का भेदन कर पाता है।

इस कार्य में दृढ़ संकल्प के साथ मेहनत सच्ची लगन होते हुए भी एक शब्द और आता है जिसे हम Honesty या ईमानदारी कहते हैं । हमें पूर्ण इमानदारी के साथ सच्चे हृदय से इस कार्य को संपन्न करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। जब तक हमारे अंदर Honesty नहीं आती तब तक हम मात्र दूसरों को दिखाने के लिए या समाज में एक आडंबर रूप में अपने को प्रस्तुत करने के लिए यह कार्य करते रहते हैं, इसीलिए हम इसमें सफल नहीं हो पाते । जिस दिन हमारे अंदर यह भावना आ जाएगी कि हमें बड़ी ईमानदारी से अपने आप को आत्मा चिंतन करना है आत्म संशोधन करना है आत्म विश्वलेशण करना है और आत्म उत्थान करना है, उसके बाद ही हमारे जीवन में परिवर्तन के आसार आने शुरू हो जाएंगे तो यह अंतिम बात और बड़ी महत्वपूर्ण बात Honesty ही है जो हमें इस कार्य में सफल होने के लिए बहुत अधिक सहायता करती है। अत: मन पर नियंत्रण से पहले हमें Honesty का lesson सीखना होगा....

❏❏❏

विचार शक्ति का चमत्कार (विचार प्रदूषण)

प्रिय पाठकों,

आज हमारे जीवन में वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण खतरनाक रुप से रहे हैं लेकिन इन सब से ज्यादा खतरनाक विचार प्रदूषण की तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता । दूसरों के प्रति ईर्ष्या का भाव रखना, बदले की भावना, दूसरों में कमी निकालना, उनके प्रति शिकायत या ना पसंदगी का भाव बना रहता है और इस से उत्पन्न होता है असंतोष जो कि निरंतर हमारे जीवन में बना रहता है। इतना ही नहीं हम जीवन भर अपने आप से दूर भागते रहते हैं ताकी हम अपनी उन्नति में स्व अवरोध न बन जाएं । सोते जागते, उठते बैठते हम जो भी सोचते हैं या भावना रखते हैं हमारा जीवन उसी दिशा में अग्रसर हो जाता है। अप्राप्त की प्राप्ति, प्राप्त की रक्षा करना फिर उसका उपभोग करना और फिर सप्राप्त की प्राप्ति की और आगे बढ़ जाना यह जीवन का निरंतर चलने वाला क्रम है। यह सब जब तक विचार चलते रहते हैं तब तक चलता है और विचारों के हिसाब से उसी दिशा में चलता रहता है और विचारो के ठहरते ही जीवन भी ठहर जाता है। तो फिर विचार अच्छे बने रहें उसका तरीका क्या है। प्रथम तो परमात्मा की बनाई मूर्तियाँ जो कि मनुष्य मात्र व प्राणी मात्र हैं उनसे प्रेम करना और दुसरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझना। दूसरा परमात्मा का निरंतर ध्यान करना जिसे हमारे विचार हमेशा शुद्ध व पवित्र बने रहें । तीसरा अपनी भावनाएं अच्छी रखना । चौथा खान पान अच्छा रखना क्योकि खान पान से विचार सीधे ही प्रभावित होते हैं। कहते हैं कि जैसा खाएं अन्न वैसा बने मन । और पांचवा बाह्य द्रष्यमान जगत निरंतर हमारे विचारो को प्रभावित कर उन मे बदलाव लाता रहता है। इस में यज्ञ करना भी एक प्रमुख निराकरण समझा जाना चाहिए वेद मंत्रो के उचारण से वाणी व विचार सशक्त बनते हैं। अग्निदेव से वायु शुद्ध होती है व वायु में छिपे बैक्टेरिया व अन्य अशुद्धियाँ नष्ट होती हैं। विषय अत्यंत लम्बा है, अगले अंक में विस्तार से लिखने का प्रयास करेगे। धन्यवाद।

राजकुमार भगवतीप्रसाद गुप्त
उपप्रधान, आर्य समाज, वाशी

आर्य समाज के स्थापना के बाद अर्ध शताब्दि के सांकेतिक इतिहास

जिज्ञासु आर्य पाठकों को अपने अतीत के इतिहास के प्रति रूचिवर्धन हेतु जो जितना जितना अपना अतीत का इतिहास पढेगा, उतना ही नया इतिहास बनायेगा।

(नोट. यह लेख आर्य समाज का इतिहास-प्रथम भाग, डा. सत्यकेतु विद्यालंकार से लिया गया है।)

आर्य समाज की स्थापना एवं पृष्ठ भूमि

पं. उम्मेद सिंह विशारद

दिसम्बर १८७४ के प्रारम्भ में स्वामी दयानन्द जी ने गुजरात और काठिचावाड में प्रचार कार्य शुरु किया। स्वामी जी बम्बई से पहले सूरत गये फिर भडौच, अहमदाबार, और राजकोट। इन सब नगरो में अपने मन्तव्यों का प्रचार करते हुए स्वामी जी १८७५ के जनवरी मास के अन्त में पुनः बम्बई आ गये थे दो महीनो के लगभग इस काल मे उन्होने जो व्याख्यान दिये जो शास्त्रार्थ किये और शास्त्र चर्चा की इस सब का संक्षेप के साथ भी उल्लेख करना सम्भव नही हैं। समाचार पत्र टाइम्स आफ इन्डिया (४ जनवरी १८७५) मे यह छपा की स्वामी दयानन्द जी को न केवल वेदों का ज्ञान है वरंच हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों से भी बड़ी परिचय है। उनमे व्याख्यान देने की शैली अत्युत्तम हैं इसलिए लोग उनके प्रवचनो को सुनने बडी संख्या मे आते थे। हितेच्छु नामक समाचार पत्र के ७ जनवरी १८७५ अंक मे छपा कि पं दयानन्द जी ने अपने थोडे दिनो मे शिक्षित समाज को जिन्होने गुजरात में हिन्दु धर्म की ऐसी योग्यता और बुद्धिमता से व्याख्यान नहीं सुना था। निस्सन्देह पं. दयानन्द ही ऐसे मनुष्य है जिनकी हिन्दुओ की वर्तमान अध पतित अवस्था के लिये आवश्यकता है।

जब स्वामी दयानन्द जी अहमदाबाद मे थे तभी उन्होने आर्य समाज के नाम से एक संगठन के निर्माण का विचार प्रकट किया था। (७ जनवरी, १८७५) में प्रकाशित हुआ कि जिन बुराईयों से हमारा वर्तमान हिन्दु समाज हानि उठा रहा है। उन्हे दूर करने हेतु पं. दयानन्द जी ने आर्य समाज और वैदिक पाठशाला स्थापित करने का प्रस्ताव किया है। आर्य समाज की स्थापना के अपने जिस विचार को स्वामी जी अहमदाबाद में क्रियान्वित नही कर सके, वह कुछ समय बाद राजकोट में क्रियान्वित हुआ। स्वामी जी ३१ दिसम्बर १८७४ को अहमदाबाद, राजकोट पहुंचे थे। वहां उनका धूमधाम के साथ स्वागत हुआ, और अनेक व्याख्यान हुए। राजकोट कठियाबाद में है, जो स्वामी जी का अपना प्रदेश है। दो साल पूर्व वहां प्रार्थना समाज की स्थापना हो चुकी थी और अनेक शिक्षित व्यक्ति उसकी सदस्यता स्वीकार कर चुके थें स्वामी जी ने प्रस्ताव किया कि राजकोट में आर्य समाज स्थापित किया जाए और प्रार्थना समाज को ही आर्य समाज में परिवर्तित कर दिया जाए। प्रार्थना समाज के सभी सदस्य सहमत हो गये इस प्रकार प्रथम आर्य समाज की स्थापना हुई। राजकोट मे स्थापित आर्य समाज की सदस्य संख्या तीस थी। श्री मणिशंकर जटाशंकर प्रधान और श्री हरगोविन्द दास द्वारकादास मंत्री। स्वामी जी ने आर्य समाज के नियम भी बनाए जिनको छपवा लिया गया था। इसके अधिवेशन नियम पूर्वक होने लगे। पर यह समाज देरतक कायम नही रह सका ६ माह में इसका अन्त हो गया।

जब स्वामी जी गुजरात कठियाबाद की यात्रा से लौट कर बम्बई आ गये और वहां आर्य समाज की स्थापना की चर्चा फिर से प्रारम्भ हो गयी। और जो आर्य समाज के प्रति मिथ्या प्रचार किया जा रहा था उसका प्रभाव देर तक कायम नही रहा सका। १७ फरवरी १८७५ के दिन गिरगांव में एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमे सैकंडो व्यक्ति उपस्थित थे। राजकृष्ण महाराज नाम एक सज्जन ने विचार प्रस्तुत किया कि आर्य समाज के नियमो में इस सिधान्त का समावेश कर दिया जाए कि जीव और ब्रह्म में एकत्व है। उनका कथन था कि यह सिधान्त अधिक लोक प्रिय है। राजकृष्ण महाराज अद्वेत वाद के प्रबल समर्थक थे, और उसके समर्थन मे ''हृदय चक्षु'' नाम से समाचार पत्र भी प्रकाशित किया करते थे स्वामी दयानन्द जी के कहने पर उन्होने इस पत्र का नाम आर्य धर्म प्रकाशक रख दिया था। परन्तु आर्य समाज के नियमो मे जीव और ब्रह्म की प्रथम तत्व की बात भी उन्हे सहन हनी थी। स्वामी जी इस पर सहमत नही हुए, उनका कहना था कि आर्य समाज की नीव असत्य पर नही रखी जा सकती। इस पर राजकृष्ण जी रुष्ट हो गये, और उन्होने स्वामी जी का विरोध करना शुरू कर दिया। फरवरी १८७५ में आर्य समाज के स्थापित न होने का यही कारण था।

बम्बई में बहुत सारे लोग आर्य समाज की स्थापना करना चहाते थे। गिरगांव रोड पर माणिक जी की बागवाडी मे एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमे आर्य समाज की नियमावली को स्वीकृत कर विधिवत समाज की स्थापना की गई। यह सभा चैत्र शुक्ल ५ शनिवार संवत १९३२ तदनुसार १० अप्रैल सन १८७५ को हुई थी। बम्बई मे आययर्य समाज की विधिवत स्थापना हो जाने पर उन २८ नियमो को भी स्वीकृत किया गया जो अगले दो वर्षों तक आर्य समाजो मे मान्य रहे। वर्तमान मे आर्य समाज के दस नियम है वे सन् १८७७ मे लाहोर में बनाये गये थे। बम्बई मे निर्धारित आर्य समाज के २८ नियमो मे संक्षेप के साथ दृष्टिपात उस महान आन्दोलन को सुचारू रूप से समझने के लिये उपयोगी है। जिसका प्रारम्भ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी आर्य समाज की स्थापना द्वारा कर रहे थें। इन नियमो में आर्य समाज संगठन की रुप रेखा दी गई है। आज भी सब आर्यों का मानना व उसके अनुसार आचरण करना आवश्यक है।

बम्बई में निर्धारित आर्य समाज के २८ प्रथम नियम

१. आर्य समाज का सब मनुष्यों के हितार्थ होना आवश्यक है।

२. इस समाज मे मुख्य स्वत: प्रमाण वेदो का ही माना जायेगा। साक्षी के लिये वेदो के ज्ञान के लिये तथा आर्य इतिहास के लिये मतपथादि ४ ब्रहंण ६ वेदांग ४ उपवेद ६ दर्शन, ११२७ वेदों की शाखा, वेद व्याख्यान, आर्य

संस्कृत ग्रन्थों का भी वेदानुकूल होने से गौण प्राण माना जायेगा।

३. इस समाज में प्रतिदेश के मध्ये ऐ प्रधान समाज होगा और अन्य समाज शाखा-प्रशाखा होंगे।

४. अन्य सब समाजो की व्यवस्था प्रधान समाज के अनुकूल रहेगी।

५. प्रधान समाज के वेदोन्तानुकुल संस्कृत और आययर्य भाषा में नाना प्रकार के सदुपदेश के पुस्तक होंगे और एक आर्य प्रकाश पत्र यथानुकूल आठ-आठ दिन में निकलेगा। यह सब समाजो में प्रवृत्त किये जायेंगे।

६. हर एक समाज में एक प्रधान पुरुष और दूसरा मंत्री तथा अन्य पुरूष और स्त्री सभासद होंगे।

७. प्रधान पुरुष इस समाज की यथावत व्यवस्था पालन करेगा और मंत्री सबके पत्रो का उत्तर तथा सबके नाम व्यवस्था लेख करेगा।

८. इस समाज में सत्पुरुष, सत्यनीति, सत्याचरणी मनुष्यों के हित कारक समाजस्थ किये जायेंगे।

९. जो ग्रहस्थ ग्रह-कृत्य के अवकाश प्राप्त हो सो जैसा घर के कामो में पुरुषार्थ करता है, उससे अधिक पुरुषार्थ इस समाज की उन्नति के लिये करे और विरक्त तो नित्य ही इस समाज की उन्नति करे अन्यथा नहीं।

१०. हर आठवें दिन प्रधान मंत्री और सभासद समाज स्थान में इकट्ठे हों और सब कामो से इस काम को मुख्य जाने !

११. इकट्ठे होकर सवर्था स्थिरचित हो, परस्पर प्राति से पक्षपात होछ कर प्रश्नोत्तर करें फिर सामवेदादि गान परमेश्वर सत्यधर्म, सत्यनीति तथा सत्योपदेश के सम्बन्ध में बाजा आदि के साथ हो और इसी विषय पर मन्त्रो के अर्थ और व्याख्यान पुन: गान फिर व्याख्यान और गान हो इत्यादि।

१२. हर एक सभासद न्यायपूवर्क पुरुषार्थ से जितना धन प्राप्त करें उसमे से आर्य समाज, आर्य विद्यालय, और आर्य पत्र पकाश के प्रचार और उन्नति के लिये आर्य समाज के धनकोष एक प्रतिशत प्रीति पूर्वक देवें, अधिक देने के अधिक धर्मफल। इस धन का इन्ही विषयों में व्यय होवे और जगह नहीं।

१३. जो मनुष्य इन कार्यों की उन्नति और प्रचार के लिये जितना प्रयत्न करे उसका उत्साह के लिये यथा योग्य सत्कार होना चाहिए।

१४. इस समाज में वेदोक्त प्रकार से हर एक स्तुति, प्रार्थना, और उपासना अद्वितीय परमेश्वर की ही करने में आएगी। अर्थात निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, आनादि, अनुपम, दयालु, सर्वजगपिता, सर्वजगन्माता, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सचिदानन्द आदि लक्षणयुक्त सर्वव्यापक, सर्वान्ययामी, अजर-अमर, अभय, नित्य, शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव, अनन्तसूखप्रद, धमार्यकाम मोक्षप्रद इत्यादि विशेषणो से परमात्मा की ही स्तुति उसका कीर्तन, प्रार्थना, उससे श्रेष्ट कार्यो मे सहाय चाहना, उपासना, उसके आनन्द स्वरूप मे मग्न हो जाना। से पूवोक निराकार आदि लक्षण वाले की ही भक्ति करनी, उसके सिवाय किसी और की कभी नही करनी।

१५. इस समाज में निषेकादि अन्त्येष्टि पर्यन्त संस्कार वेदोक्त किये जायेंगे।

१६. आर्य विद्यालय में वेदादि सनातन आर्षग्रन्थो का पठन-पाठन कराया जायेगा और वेदोक्त रीति से ही सत्य शिक्षा सब पुरूष और स्त्री के सुधार की होगी।

१७. इस समाज में स्वदेश के हितार्थ दो प्रकार की शुद्धि के लिए प्रचल किया जायगा एक परमार्थ दूसरी लोक व्यहार! इन दोनो का शोधन और शुद्धता की उन्नति तथा सब संसार के हित की उन्नति की जायेगी।

१८. इस समाज में न्याय वही माना जाएगा जो पक्षपात रहित अर्थात प्रत्यक्ष आदि प्रमाणो से परीक्षित सत्य धर्म वेदोक्त होगा, इसके विपरीत को तथा शक्ति न माना जागेया।

१९. इस समाज की ओर से श्रेष्ट विद्वान सर्वत्र सदुपदेश करने के लिए समयानुकूल भेजे जायेंगे।

२०. स्त्री और पुरुष दोनो के विद्याभ्यास के लिए हर एक स्थान में यथाशक्ति अलग-अलग जायेंगे। स्त्रियों के लिए पाठशाला में अध्यापन और सेवा प्रबन्ध स्त्रियों द्वारा ही किया जायेगा, और पुरुष पाठशाला पुरुषो द्वारा इसके विरूद्ध नहीं।

२१. उन पाठशालाओ की व्यवस्था प्रधान समाज के अनुकुल पालन की जाएगी।

२२. इस समाज के प्रधान आदि सब सभासद परस्पर प्रीति के लिए अभिमान हठ, दुराग्रह और क्रोध आदि सब दुर्गुण छोड कर उपकार सुहृदयता में सबसे सबका निर्बेर होकर स्वात्भवत सप्रीति करनी होगी।

२३. विचार समय सब व्यवहारो मे न्याययुक्त सब हित की जो सत्य बात भली प्रकार विचार से ठहरे उसी को सब सभासदो को प्रकट करके मानी जाए, इसके विरुद्ध न मानी जाए। इसी का नाम पक्षपात छोडना है।

२४. जो पुरुष इन नियमो के अनुकूल आचरण करने वाला धर्मात्मा सदगुणी हो उसको उत्तम समाज में प्रविष्ट करना, उसके विपरीत को साधारण समाज मे रखना और अत्यन्त प्रत्यक्ष दृष्ट को समाज से निकाल ही देना, परन्तु यह काम पक्षपात से नही करना, बल्कि यह दोनो बाते श्रेष्ट सभासदो केही विचार की जाये, अन्य प्रकार से नही।

२५. आर्य समाज आर्य विद्यालय 'आर्य प्रकाश'' पत्र और आर्य समाज का अर्थ धन कोष इन चारो की रक्षा और उन्नति प्रधानादि सब सभासद तन-मन धन से सदा करे।

२६. जब तक नौकरी करते और कराने वाला आर्य समाजस्थ मिलेतब तक और की नौकरी न करें, और न किसी को नौकर रखें, वे दोनो स्वामी सेवक भाव से यथावत बरतें।

जब विवाह पुत्र-जन्म महालाभ वा मरण व कोई समय दान व धन व्यय करने का हो तब आर्य समाज के निभिक्त धन आदि दान किया करें। ढेसा धर्म का काम और कोई नही है। इस निश्यय को जानकर इसको कभी न भूलें।

२८. इन नियमो मे कोई नियम नया लिखा जायेगा या कोई निकाल जायेगा व न्यूनाधिक किया जायेगा सो सब श्रेष्ठ सभासदो की विचार रीति से सब श्रेष्ठ सभासदो को विदित करके ही यथा योग्य करना होगा !

नोट- नई पीढी को अपने अतीत के इतिहास के प्रति जागरुकता हेतु विशेष गतांक से आगे यह लेख आर्य समाज का इतिहास भाग लि. सत्यकेतु विधातकार से लिया गया है।

पता :– गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून उत्तराखण्ड।
मो. : ९४११५१२०१९/९५५७६४१८००

स्वामी दयानन्द सरस्वती

संघ-संचालक गुरु गोलवलकर जी-

अपनेपन का उद्दीप्त स्वाभिमान लेकर उन्होंने सोय समाज को जागृत किया। अनुकरण की दास-वृत्ति पर प्रहार कर स्वतन्त्र प्रतिभायुक्त राष्ट्रीय आस्था का सन्देश दिया। जीवन का कोई क्षेत्र उनके तेजस्वी विचारों से अस्पृश्य नहीं रहा।

स्वातन्त्र्य-वीर सावरकर-

मेरे हृदय में हमारे आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द के लिए सबसे अधिक आदर और सम्मान है। स्वामी दयानन्द वस्तुत: एक ऋषि, उच्चकोटि के सुधारक, न्यायप्रिय और देशभक्त थे।

श्रीयुत सी.एस. रंगा अय्यर एम. एल. ए.-

ऋषि दयानन्द संसार-भर के सर्वश्रेष्ठ ऋषियों में से थे। उनका स्थान ऋषि-पदवी से भी श्रेष्ठ था। वे महर्षि थे। मैं इससे भी आगे जाता हूँ और उन्हें ब्रह्म-ऋषि की पदवी से सम्बोधित करता हूँ। मेरी सम्मति में वे वशिष्ठ और विश्वामित्र के समान हैं।

योगी अरविन्द घोष-

दयानद का व्यक्तित्व अपनी प्रणाली और काम के कारण अद्भुत था। दृष्टान्त के रूप में यूँ समझिये कि कोर्द व्यक्ति देर तक पर्वतमाला के बीचोंबीच चला जा रहा है। पर्वतों में कोई बहुत ऊँचे हैं, कोई बहुत कम, परन्तु अतीव सुन्दर, रमणीय और अपनी विशेष ऊँचाई के कारण सभी चित्ताकर्षक हैं। फिर उनमें एक पर्वत बिल्कुल अलग खड़ा है। बड़ा महत्त्वशाली और दृढ़ प्रस्तरमय है। उसकी चोटी पर हरियाली दृष्टिगोचर होती है और एक-अकेला देवदारु का वृक्ष आकाश से बातें कर रहा है। इस पर्वत के भीतर से स्वच्छ और उपजाऊ जल का प्रबल स्त्रोत बड़े वेग से बहता हुआ उपत्यका की ओर दौड़ रहा है, मानो वह उस उपत्यका का जीवनमूल है। यह संस्कार है जो दयानन्द का व्यक्तित्व मेरे मन पर डालता है।

रायबहादुर पं. सीताराम जी एम. ए.-

श्री राममोहन राय, श्री केशवचन्द्र सेन, श्री रामकृष्ण परमहंस और श्री विवेकानन्द भी हिन्दू धर्म के विशिष्ट सुधारकों में शिरोमणि हैं। परन्तु वात के रोग को जीर्ण शरीर से निकाल इसमें अच्छा बल उत्पन्न कर देने का श्रेय महात्मा स्वामी दयानन्द जी को ही देना चाहिए।

जर्मन प्रो. डॉ. विण्टरनीज-

हमें वेदों के अध्ययन को प्रोत्साहन देने और यह सिद्ध करने में कि मूर्तिपूजा वेदसम्मत नहीं है, स्वामी दयानन्द के महान् उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक वर्तमान जातिभेद की मूर्खता और उसकी हानियों के विरूध्द अपने अनुयायियों को तैयार करने के अतिरिक्त और कुछ भी न करते तो भी वे वर्तमान भारत के बड़े नेता है।

दिव्य दयानन्द से साभार

जगत को आर्य बनाओ

ऋषियों का यह देश था, आर्यवर्त महान।
देता था संसार करो पावन वैदिक ज्ञान॥
पावन वैदिक ज्ञान करे कल्याण जगत का।
वेद ज्ञान से हुआ, सुनों ! उत्थान जगत का॥
गौतम, कपिल कणाद, हुए ऋषिवैदिक ज्ञाता।
सच्चे ईश्वर भक्त, सन्त जीवन निर्माता॥१॥

जगत गुरु दयानन्द ने, किया गजब का काम।
वेदों का प्रचार कर, किया जगत में नाम॥
किया जगत में नाम, मौत का खोंफन खाया।
पी. पी. करके जहर, सन्त ने जगए जगाया॥
झेले भारी कष्ट, नहीं योगी घबराया।
ऐसा अद्भुत सन्त, नहीं दुनियां में आया॥२॥

आर्यवर्त में हो गया, पाखण्डिन्यों का जोर।
वेत विरोधी नास्तिक, मचा रहे हैं शोर॥
मचा रहे हैं शोर, पाप-पापी करते हैं।
हुए स्वार्थ में लिल्प, न ईश्वर से डरते हैं॥
यहां हजारों धूर्त, पडे हैं अब जेलों में।
फिर भी लाखों मूढ, सम्मिल्लित है चेष्टों में॥३॥

बुराडी दिल्ली का सुनों, समाचार घर ध्यान।
मेरे अंध विश्वास में ग्यारह जन नादान॥
ग्यारह जन नादान, ढ़ोंगियों ने मरवाए।
वेदों का सन्देश, अभागे समझ न पाए॥
व्यर्थ न देते जान, वेद पथ अगर जानते।
ऋषि दयानन्द महान, सन्त को अगर मानते॥४॥

जागो, प्यारे आर्यो ! करो वेद प्रचार।
बिना वेद प्रचार के, होगा नहीं सुधार॥
होगा नहीं सुधार, समझ लो धर्म साथियों।
यदि चाहो कल्याण, करो शुभ कर्म साथियों॥
देव दयानन्द बनो, जगत में धूम मचाओ।
''नन्दल्गल'' बन आर्य, विश्व को आर्य बनाओं॥५॥

पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक पत्रकार
आर्य सदन, बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चल भाष क्रमांक : ९८१३८ ४५७७४

जागो अब वैदिक विद्वानों

जागो अब वैदिक विद्वानों, मिलकर कदम बढ़ाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओं॥
प्यारा आर्यवर्त हमारा, दुनिया में था नामी।
विद्या बल में, रण कौशल में, था वह जग का स्वामी॥
सकल जगत का गुरु कभी था, जग को साफ बताओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं हैं, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ॥१॥
गौतम, कपिल, कणाद जैमिनी, ऋषि महान यहाँ थे।
राम, कृष्ण, बलराम, भीम जैसे बलवान यहाँ थे॥
वीर विक्रमादित्य भोज की, गौरव गाथा गाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ॥२॥
ऋषियों को प्यारे भारत में पाप गया बढ़ भारी।
लाखों गऊएं बिन खता निशि दिन जाती हैं मारी॥
सांगा बन्दा, नलवा बन, दुष्टों के शीष उडाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ॥३॥
देव भूमि भारत में फिरते हैं लाखों पाखण्डी।
भोली-भाली जनता को, ठगते हैं धूर्त उदण्डी॥
पोल खोल दो शैतानों की, लेखराम बन जाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ॥४॥
जड़ पूजा में लगे हुए हैं, भारत के नर-नारी।
युवक युवतियों पर हावी है, फैशन की बीमारी॥
मद्य, मांस पीते खाते हैं, मूढ़ों को समझाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ॥५॥
श्रद्धानन्द, लाजपत जैसे, नहीं रहे अब नेता।
कुर्सी के हैं दास, स्वार्थी, बनते वीर विजेता॥
सत्य अहिंसा सदाचार का, इनको पाठ पढ़ाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ॥६॥
भारत स्वर्ग बनाना है तो, बात हमारी मानो।
सुख पाओगे हे मित्रों तुम, भला बुरा पहचानो॥
जगत गुरु ऋषि दयानन्द की, जय-जयकार मनाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ॥७॥
हो जीवन निर्माण दोस्तो, भले काम कर जाओ।
नन्द लाल 'निर्भय' तुम अपना जीवन सफल बनाओ॥
जगत पिता उस जगदीश्वर को कभी नहीं विसराओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं हैं, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ॥८॥

– **पं. नन्दलाल निर्भय** 'सिद्धाताचार्य'
ग्राम बहीन, पलवल, मो. : ९८१३८४५७७४

गीत

विष्णुपुरी के तीन गीत

कविवर कुछ ऐसा गीत सुनाओ
ताकि सीमापार दुश्मन भाग जाये।
एक ज्वारभाटा इधर से आये
एक ज्वारभाटा उधर से आये,
जानों के लाले पड़ जाये,
त्राहिमाम् दुश्मन में छाये,
सर्वनाश और सत्यानाश का
धुँआधार दुश्मन में छा जाये
उगलें तोप आग जल जायें,
भस्मासुर जख्मी हो जाये
अस्माँ की छाती फट जाये,
तरेगन चूर-चूर हो गिर जावे
कविवर कुछ ऐसी गीत सुनाओ
धरती माता की छाती अमृतमय
रस पी काल-कूट हो जाये,
अश्रु का पानी सुखे पर
मधु घूँट हो जाये
एक तरफ ईर्ष्या-द्वेष काँपे,
धीरे-धीरे वे विलुप्त हो जायें,
अंधा मूर्ख ईश्वर का वह
अटल पत्थर विचलित हो जाये,
एक दूसरी ओर सिंह-गर्जना
गर्जन देनेवाला उठ धायें,
गगन में नाशक तर्जन ध्वनि महराये
कविवर कुछ ऐसी गीत सुनाओ
ताकि सीमापार दुश्मन भाग जाये।
हत्या और घुसपैठ में लगा जो
कट-कर जमी पर गिर जायें,
विश्वंभर का विध्वंशक शस्त्र
वीणा के तार से सब मूक हो जाये,
शक्ति दण्ड टूटे उस
महादुष्ट का सिंहासन थर्राये,
उसका पोषक श्वासोच्छवास,
संसार के अंगन में घहराये,
महानाश, हॉ सर्वनाश की
महा प्रलयंकारी ऑख खुल जायें,
कविवर कुछ ऐसी गीत सुनाओ
ताकि सीमापार दुश्मन भाग जाये।

जय हो भारत-भूमि

जय हो जय हो। अखण्ड भारत भूमि।
अमर शहीदों ने तेरी महिमा बखानी
तारा चन्द्र आकाश से शान्ति-सुधा बरसाता है,
मलय पर्वत अविरल नव जीवन सरसाता है।
मन हरा-भरा कर देता है आँचल तेरा धानी,
जय हो जय हो भारत-भूमि।
तेरे हृदय-हिमालय से गौरव-गंगा बहती है,
अपने ममतामय प्यार से प्लावित करती रहती है।
ध्यान-मग्न हो रही देख सरस्वती-विधि वाणी,
जय हो जय हो भारत-भूमि।
तेरे चित्र-विचित्र आभूषण हैं फूलों के हारों के
उन्नत-अम्बर आतपत्र में सोने जड़े हैं तारों के।
नभ से मोती झरते हैं या बादलो से पानी।
जय हो जय हो भारत-भूमि।
वीर-हस्त हरता है तेरे बल-कुल का सब शक,
रत्नाकर-रस पैरों में अब भी पड़ी कनक-पाक।
सच्चा सिंह सवार बनी तरू विश्व पालनी,
जय हो जय हो भारत-भूमि।
वीर सेना दिग्विजय जिन्होंने विश्व जीत अभियान किया,
तेरा मृत्पात्र मात्र रख धन का त्याग किया।
तेरे जब हुए हैं ऐसे विज्ञानी, दानी, ज्ञानी,
जय हो जय हो भारत भूमि।
तेरा बड़ा अतीत काल है आराध्य योग समर्थ,
वर्तमान सैन्य साधन है भविष्य सिद्धी अर्थ।
काश्मीर मुक्ति की युक्ति तू रख अभिमानी,
जय हो जय हो अखण्ड भारत-भूमि।

अमर वीर

अमर वीर पुत्र हो,
कठोरप्रतिज्ञ सोच लो,
कठिन पथ सीमा है,
चले चलो, बढ़े चलो।
हिमालय उत्तुंग शिखर से
प्रबुद्ध शुद्ध हिन्दुस्तान
स्वयं प्रभा समुज्वला
कश्मीर सीमा पुकारती
अनन्त कीर्ति रोराशयाँ
प्रचण्ड दिव्य दाह-सी
सपूत भारत-भूमि के
ठहरो न शूर साहसी।
सैनिक सैन्य-सिन्धु में
काश्मीर-सीमा से चलो,
बहादुर वीर विजयी बनो,
चले चलो, बढ़े चलो।

डॉ. विनयकुमार 'विष्णुपुरी'
शीला भवन शिवशक्ति नगर, बाजार समिति,
पटना- ८०० ००६. मोबाईल : ९३०४१२०५७९

''वेदों में विश्व बन्धुत्व की भावना की विवेचना''

इस लेख के सम्बन्ध में कुछ लिखूँ, उससे पहले यह बतलाना आवश्यक है कि ईश्वर ने पूरी सृष्टि रचने के बाद यानि पशु-पक्षी, कीट-पतगं, पहाड़ सृमुद्र, नदी-नाले सूर्य, चन्द्रमा पृथ्वी आकाश आदि सब रचने के पश्चात् मानव की उत्पत्ति तिब्बत के पठार पर पृथ्वी के अन्दर कृत्रीम गर्भाशय बनाकर उने युवा स्त्री-पुरुषोंकी उत्पतिकी साथ ही चार ऋषि जिनकी आत्मा अति श्रेष्ठ व पवित्र थी, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा था, उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, उनका प्रकाश करके उनके मुख से उच्चारित करवाये जिनको उपस्थित सभी युवा स्त्री पुरुषों ने उस वेद ज्ञान को सुना। उन पुरुषों में ऋषिब्रह्मा भी थे जिनकी बुद्धि अति तीव्र थी, उसने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाया। इसके बाद यहवेद - ज्ञान, पिता उनके पुत्रों को, गुरु अपने शिष्यों को सुनाते रहे और इस प्रकार इस यह वेद-ज्ञान लाखों, करोड़ों वर्षों तक चलता रहा, इसी लिए इस वेद-ज्ञान को श्रुति भी कहतें हैं यानि सुनकर दूसरों को सुनाना। तत्पश्चात् लाखों, करोड़ों वर्षों बाद जब कागज, स्याही, कलम आदि का अविष्कार हो गया तब इनको चार पुस्तकों में लिपि वद्ध कर दिया जिनकों वेद कहते हैं।

वेद का तात्पर्य ज्ञान है यह ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आदि में एक विधान के रुप में मनुष्य मात्र को दिया। जिस प्रकार सरकारी विधानही से राष्ट्र चलता है, उसी प्रकार यह ज्ञान मनुष्यों के लिए विधान है। इन में ईश्वर क्या काम मनुष्य को करना चाहिए, क्या काम नही करने चाहिए। किन कार्यो के कानून से मनुष्य अपने जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति व समृद्धि को प्राप्त करता है और जीवन सुखी व सम्पन्न बनाते हुए अन्यों का जीवन भी सुखी व सम्पन्न बनाता है। जो व्यक्ति वेदानुसार अपने जीवन को चलाता है वह मनुष्यों के चार पुरुषार्थ धर्म अर्थ, कामको भलि प्रकार करते हुए मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। मोक्ष प्राप्ति के लिए ही ईश्वर जीव को इस धरती पर भेजता है।

वेदों में ईश्वर ने मनुष्य के जीवन में काम आने वाले सभी विषय के सम्बन्ध में लिखा हुआ है जिनमें विश्व बन्धुत्व की भावना पर विशेष जोर दिया गया है जिससे विश्व में सुख व शान्ति बनी रहे। वेदों में अनेक विश्वबन्धुत्व के मन्त्रों में कुछ मन्त्र यहाँ प्रस्तुत करते हैं, जो इसी भाँति हैं।

मन्त्र:- अज्येष्ठा सो अकनिष्ठा स एते स भ्रातये वा वृध्ध सौभागाय। (ऋग्वेद)

अर्थ:- हम सब भाई-भाई हैं। न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। सौभाग्य के लिए हम सब परस्पर मिलकर उन्नति करें।

मन्त्र:- माता भूमि: पुत्रो ऽहं पृथिव्या: (अथर्व वेद)

अर्थ :- भूमि हमारी माता है और हम सब उसकी सन्तान हैं।

मन्त्र :- वसुधैव कुटुम्बकम।

अर्थ :- पूरा विश्व एक परिवार है।

मन्त्र:- सर्व भूतेसुचान्याने तबो न विचिकित्सति

अर्थ:- हे मनुष्य! तू सब प्राणियों में अपनी आत्मा को देख और सब की आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझ।

मन्त्र:- अनुव्रत: पितु: पुत्र: (अथर्व वेद)

अर्थ :- पुत्र, पिता के व्रत (आदर्श) का अनुसरण करने वाला होवे।

मन्त्र:- कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

अर्थ :- पूरे विश्व को आर्य (श्रेष्ठी बनाओ)

मन्त्र :- जीवास्थ जीव्यासम (अथर्व वेद)

अर्थ :- स्वयं जीवो और दूसरों को जीने दो।

मन्त्र :- सत्येनो त्रमिता भूमि: (यजुर्वेद)

अर्थ :- यह भूमि सत्य पर टिकी है

मन्त्र :- आत्मवत् सर्वभूतेषु य: पश्चाति स पण्डित।

अर्थ :- जो सब प्राणियों की आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझता है। वही पण्डित (विद्वान) है।

मन्त्र :- तेन त्यक्तेन भुजिंथा, मागृघ: कस्य स्विद्धनम्। (यजुर्वेद)

अर्थ:- इस संसार का त्याग भाव से भोग करो, इसमें लिप्त न हो, लालच न करो, यह संसार किसी का नहीं, ईश्वर का है।

(नोट:- इस मन्त्र का मेरे जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा है)

मन्त्र : अहमनृतात सत्यमुपैसि (यजुर्वेद)

अर्थ:- मैं असत्य से सत्य की ओर चलूँ।

मन्त्र:- मत्र विश्य भवत्येक नीडम्। (यजुर्वेद)

अर्थ:- जिसके साथ विश्व एक आश्रय वाला होता है।

मन्त्र:- मित्रस्य माचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षान्ताम् (यजुर्वेद)

अर्थ:- सब प्राणियों को हम मित्र की दृष्टि से देखें।

मन्त्र:- अकर्मा दस्यु रभि नो अमन्तुरन्य व्रतो अमानुष:।
त्वं तस्या मित्र हन्व धर्दा सस्य दम्यय:।। (यजुर्वेद)

अर्थ:- जो कर्म नहीं करता वह दस्यु है, उसे कोई सुख न होवे,
तुम शत्रुओं के समान उसका वध कर दो अथवा दास के समान उस पर अनुशासन करो।

वचन: आत्मन: प्रति कूलानि परेषां न समाचरेत (वेदों के विद्वान भिष्म पितामहा का वचन भी वेदों के समान है)

अर्थ:- जो काम आपको अच्छा नहीं लगता, वह काम दूसरों के लिए भी न करो

मन्त्र:- यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म:।

अर्थ:- यज्ञ करना सब से श्रेष्ठ काम है।

मन्त्र:- स्वर्ग कामो यजेत (महर्षि याज्ञ वल्क्य, शतपथ ब्राह्मण में लिखा है)

अर्थ:- जिसकी स्वर्ग जाने की कामना है, वह यज्ञ करे।

मन्त्र: सत्यमेव जयते, ना नृतम्।

अर्थ :- सत्य की सदैव जीत होती है, झूठ की नहीं।

कुछ वेद-मन्त्र व वेद मन्त्रों के समान ही मन्त्र, अर्थ सहित लिखे है, कृपया सुधि पाठक गण विचार व मनन करें

खुशहालचन्द्र आर्य
मो. : ९८३०१ ३५७९४

नूतन निष्काम पत्रिका वर्ष-९ अंक-११ मुम्बई नवम्बर- २०१८ पृष्ठ-१६ मूल्य- रु. ९/-

कार्तिक - २०७५ (२०१८) Post Date : 25-11-2018 MCN/136/2016-2018 MAHRIL 06007/31/12/18-TC पोष्ट आफिस : सांताक्रुज़ (प.)

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई का मुखपत्र

संपादक : **संगीत आर्य**

मुद्रक एवं प्रकाशक : **चन्द्रपाल गुप्त द्वारा कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस,** २६, मंगलदास रोड, मुंबई-२. से मुद्रित कराकर आर्य समाज भवन, वी. पी. रोड, (लिंकिंग रोड़), सान्ताक्रुज़ (प.) मुंबई-४०० ०५४. से प्रकाशित किया। ● **दूरभाष : २६६० २८००/२६६० २०७५**

प्रति,

''ऋण तभी चुकेगा''

ऋण तभी चुगेका, इस ऋषिराज का।
विश्व का गुरु बने, भारत यह आज का ॥
वैदिक धर्मी आर्यो का चक्रवर्ती राज्य था, बतलाता इतिहास हमारा,
इसीलिए पूरे भू-मण्डल को सुखी बनाने का, रहता था प्रयास हमारा,
सम्पूर्णविश्व चारित्रिक शिक्षा पाने के लिए आता था पास हमारा,
हमारे ही देशवासियों की घूट व अज्ञान के कारण हो गया ह्रास हमारा।
जिससेबने हम गुलाम और ''सोने की। चिड़िया''
''भारत में ही रहा आज अभाव अनाज का।

ऋण तभी चुकेगा ......

स्वराज्य ही सब से उत्तम होता, सब से पहले यह पैगाम दिया ऋषिराज ने,
पारस के समान भारत को विश्व का सर्वोत्तम धाम, बताया ऋषिराज ने,
ऋषियों की पुण्य भूमि भारत को करते थे सभी प्रणाम बताया ऋषिराज ने,
वेदानुकूल जीवन यापन करना, होता सर्वोत्तम काम, बताया ऋषिराज ने,
अबआर्यो! यही तुम्हारा काम, फैलादो वैदिक धर्म ग्राम-ग्राम, जो था स्वप्न योगीराजकी।

ऋण तभी चुकेगा ......

वैदिक धर्म अपनाने से ही भारत बन सकेगा पुनः ''विश्व गुरु'' और स्वर्गधाम तब घर-घर होगा पितृजनों का सम्मान और सन्ध्या करेंगे सुबह और शाम, देश, धर्म समाज की सेवा का लेगे व्रत और स्वार्थ राहित करेंगे सभी काम, चारों वर्णों, आश्रमों का होगा पूर्णतः पालन करेंगे वेद प्रचार बिना किये आश्रम सभी बनेंगे वेदजती ''खुशहाल'' बनेगी पूरी धरती, और सभी रखेंगे ध्यान परहित के काज का।

ऋण तभी चुकेगा .....

खुशहालचन्द्र आर्य
द्वारा-गोविन्द राम आर्य अण्ड सन्स
१८० महात्मा गान्धी रोड, (दो तहला)
कोलकता- ७०० ००७.

''होन हार वीरवान के''

होन हार वीरवान के. होते चीकने पात, कहता हैं जग सारा।
बचपने में ही दिखलाई पड़ जाते हैं, उसके लक्षण औरों सेन्यारा ।।टेक।।
श्रीराम बचपन से ही अयोध्यावासियों को लगने लगा था प्यारा।
श्रीकृष्ण बचपन से ही वृन्दावन के बालं ग्वालोंका बनगया था दुलारा।।
महात्मा बुद्ध का जीवों के प्रति प्रेम भाव का बचपन में ही हो गया था जग में पसारा।
आदि शंकरा चार्य की विद्वता का यश छोटी उम्र में ही फैल गया था सबसे न्यारा ।।
वेदज्ञ महर्षि दयानन्द ने चौदह वर्ष की अल्पायु में ही पढ़ लिया था यजुर्वेद सारा।

होन हार वीरवान के .....

युधिष्ठर की सत्यवादिता का परिचय गुरु जी को मिल गया था बचपन में।
अभिमन्यु की वीरता का उदाहरण महाभारत में मिल गया था बचपन में।।
सीता माता ने शिव धनुष्य उठाकर अपना पराक्रम दिखा दिया था बचपन में।
हनुमान बनेगा महावीर शिला पर गिरने की घटना से प्रकट हो गया था बचपन में।।
भक्त प्रहलाद को भक्ति को दुष्ट हिरणा कश्यपने ली थी अनेक वार परीक्षा पर वही था हारा।

होन हार वीरवान के ....

शेर शिवाजी के किला जीतने के मनोभाव माता जीजाबाईने समज़ लिया था बचपन में।
वीर हकिकत को हिन्दू-देवताओं का अपमान नहीं सहन हुआ था बचपन में।।
पटेलजी का दृढ निश्चय और साहास का पता, मिल गया था, एक फोडेकी घटनासे बचपन में।
गान्धीजी ने दुर्गुणों का त्याग सदगुणों की धारण आरम्भ किया था बचपन में।।
बचपन में ही पिस्तौल की घटना से मिल जान गया थांबनेगा शान्ति भगत सिह पुत्र हमारा।

होन हार वीरवान के ....

चन्द्रगुप्त की राज्य संचालन की योग्यता राजनीतिज्ञ चाणक्य ने परख ली थी बचपन में।
रानी झाँसी लक्ष्मी बाईने बर्च्छी, भाले, तलवार आदि नाना से सीख लिए थे बचपन में ।।
वीर सावरकर, सुभाष बाबु, चन्द्रशेखर की देश भक्ति की भावना दीख गई थी बचपन में।
''खुशहाल''ची जोड़ने लग गया था, साधारण सी तुलबन्दी पिलानी पढ़ते समयही बचपन में।
बचपन में ही वीर उधमसिंह जुल्मी डायर को मारने की ठान ली थी बतलाता इतिहास हमारा।

होन हार वीरवान के ....